शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

अकबर कालीन दरबार के हिन्दी कवि

प्राप्तिः 19.12.2023
स्वीकृतः 25.12.2023

92

डा० पंकज शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
एन०ए०एस० कॉलिज, मेरठ
ईमेलः

ललित कुमार
शोधार्थी, लाइब्रेरियन, इतिहास विभाग
एन०ए०एस० कॉलिज, मेरठ
विश्वविद्यालय सेवायोजन केन्द्र,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेलः

सारांश

मध्ययुगीन मुगल कालीन शासको में से एक अकबर का नाम भारत के इतिहास में महानतम शासकों के रूप में शामिल किया जाता है। अकबर अद्वितीय व्यक्तित्व से परिपूर्ण था। अकबर विद्वानों का आदर सम्मान करता था तथा वह स्वयं भी विद्यानुरागी और प्रबुद्ध शासक था। वह साहित्य, कला और संस्कृति का महान वाहक, दानशील प्रवृत्ति का उदार शासक था। निःसन्देह अकबर में प्रतिभाशाली एवं गुणी शासक के लक्षण विद्यमान थे। उसने अपने दरबार में श्रेष्ठ कलाकारों और सुकवियों को आश्रय प्रदान किया था। उसके दरबार में विद्वानो का बहुत सम्मान होता था अकबर के नवरत्न अति गुणवान और प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्ति थे। इन नवरत्नों में अग्रगण्य संगीतज्ञ तानसेन, बीरबल, टोडरमल, अब्दुर्रहीम खानखाना आदि की रचनाओं का हिन्दी काव्य जगत में अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा विशिष्ट स्थान है। नवरत्नो के अतिरिक्त दरबार के अनेक प्रतिष्ठित पदाधिकारियों तथा राजपुरूषों की भी कविता में विशेष रूचि रही थी। इस कारण अकबर के दरबार में हिंदी कवियों को भी समुचित सम्मान और अवसर प्राप्त हुआ। इन कवियों में रहीम, नरहरि, गंग, बीरबल, तानसेन, पृथ्वीराज, मनोहर कवि, टोडरमल, सूरदास, मदन मोहन, राजा आसकरण, चतुर्भुज दास, दुरसाजी, होलशय, करनेश, सूरदास, कुंभनदास, व्यास आदि अनेक हिन्दी कवियों ने अकबर के दरबार के गौरव को बढ़ान में योगदान दिया। सारांश रूप में कहा जा सकता है कि अकबर के दरबार का हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में बहुत बड़ा ही योगदान रहा है।

अकबर स्वयं कला के गुणों का पोषक रहा है, उसके काव्यानुराग के कारण ही दरबार में कवियों, कलाकारों का अंबार लगा रहता था। अकबर के दरबार में राज्य आश्रित स्थायी कवि समुदाय तथा अवसर विशेष पर आने वाले अतिथि कवियों की संख्या भी पर्याप्त थी। अतः इन कवियों को अध्ययन सुविधा हेतु दो भागों विभाजित किया जा सकता है 1. स्थायी कवि 2. अतिथि कवि। स्थायी कवियो में अकबर के दरबार के मंत्री, नवरत्न एवं विश्वासपात्र राजपुरूश सम्मिलित थे।

अकबर दरबार के स्थायी हिन्दी कवि

नरहरि–इनमें कविवर्य नरहरि सम्राट अकबर के कष्पापात्र ही नही बल्कि एक अनुभवी मार्गदर्शक भी थे। अकबर दरबार में नरहरि वयोवष्द्ध और अत्यधिक सम्मानित कवि थे। आपके जन्म का विद्वानो में मतभेद हैं। विद्वानो के मतानुसार इनका जन्म रायबरेली जिले के डलमऊ तहसील के "पखरौल" नामक गांव में संवत् 1562 को तथा मष्त्यू 1667 में मानी गयी है। कविवर्य नरहरि का संबन्ध अकबर के पूर्वजो से भी माना जाता है और यह भी मान्यता है कि इन्हे बाबर ने भी सम्मानित किया था। इनके तीन ग्रन्थों का उल्लेख इतिहास ग्रन्थों में मिलता है। 1. रूक्मिणी मंगल 2. छप्पय नीति 3. कवित्त संग्रह। नरहरि भक्तिकालीन कवि थे, उन्होने लोकमर्यादा और आदर्श निर्माण के लिये अनेक छप्पय लिखे है। उन्होने रचनाओं में सीता स्वयंवर, राधाकृष्ण के रूप सौन्दर्य तथा गोपियों के विरह का वर्णन मिलता है, विरह की अभिव्यक्ति के साथ ही प्रकृति का सुंदर चित्रण इनकी कविता में दिखाई देता है।

बीरबल–बीरबल अकबर दरबार के नवरत्नों में बड़े ही वाक्चतुर और हाजिर जवाब राजकवि थे। इनके जीवन–वृत्त के संदर्भ में भी एक मत नही है। मुंशी देवी प्रसाद ने अपनी पुस्तक राजा बीरबल में लिखा है[3] कि बीरबल का नाम ब्रह्मदास और उनकी जाति ब्राहमण थी। कानपुर में एक साधारण कान्यकुब्ज ब्राहमण गंगादास के यहॉ इनका जन्म हुआ। जन्म तिथि और जन्म–स्थान को लेकर भी अलग–अलग मत प्रवाह है। यह सत्य है कि इन कवियों ने अपने विषय में बहुत कम लिखा है। बीरबल की सर्वगुण सम्पन्नता से प्रभावित होकर इन्हे अकबर ने "कविराय" "मुल्कुलशोरा" एवं बुद्धिमान मंत्री आदि उपाधियों से सम्मानित किया था। इतना ही नही बीरबल की न्यायप्रियता को देखकर उन्हें अकबर ने न्यायाधीश के पद पर भी प्रतिष्ठित किया था। मिश्रबंधु विनोद में लिखा है बीरबल अकबर के सेनानायकों में से थे और युद्धों में भी जाते थे। वास्तव में बीरबल अकबर दरबार के नवरत्नों में सबसे अधिक विश्वासपात्र तथा अकबर के मित्र थे। ग्रंथ तथा स्वतंत्र रूप में इनकी कोई रचना उपलब्ध नही होती, केवल फुटकल छंद ही यहाँ–वहाँ उपलब्ध होते है। मिश्रबंधु विनोद में लिखा है कि बीरबल सदैव कविता के प्रेमी रहे और ब्रजभाषा की बहुत अच्छी रचना करते थे। बीरबल की कविता में भक्ति और उपदेश की अधिकता थी इनके कई छंदो में कृष्ण की बाललीलाओं का वर्णन है। इन्होने संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार के अत्यन्त सुन्दर चित्र उपस्थित किये है। इनके उपदेश और शिक्षा संबंधी छंद उच्च कोटि के है। निःसंदेह वे अकबरी दरबार के नवरत्नो में एक अमूल्य रत्न थे।

तानसेन– तानसेन अकबर दरबार के नवरत्नों में से एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ और गायक कवि थे। तानसेन के जीवन के संदर्भ कुछ महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक ग्रंथों, तत्कालीन कवियों की रचनाओं और कवि के आत्म–चरित्रिक उल्लेखों से प्रमाणित होता है, प्राप्त संदर्भो के आधार पर तानसेन का जन्म संवत् 1578 या 1588 को ग्वालियर के समीप बेहट गांव में माना जाता है। इतिहासकार अबुल फजल के अनुसार इनकी मृत्यू 1646 में हुई। तानसेन यह इनकी उपाधि रही है। इनके मूल नाम को लेकर भी कई तर्क दिये जाते है। किंतु वे तानसेन नाम से ही अधिक प्रसिद्ध हुए है। इनका सम्बन्ध एक ब्राह्मण परिवार से रहा किंतु अकबर या गुरू गौस मुहम्मद के प्रभाव से इन्होने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेने के प्रमाण मिलते हे। इस संदर्भ में मिश्र बंधु लिखते है[4]– तानसेन के धर्म परिवर्तन में उनके गुरू गौस मुहम्मद का प्रभाव ही सर्वोपरि था। इसमें कोई संदेह नही कि तानसेन

अपने दौर के प्रसिद्ध गायक, संगीतज्ञ तथा उच्च कोटि के कवि भी थे। हिंदी इतिहास ग्रंथों में तानसेन के तीन ग्रंथों का उल्लेख मिलता है–1. संगीतसार 2. रागमाला 3. गणेश स्रोत जो कि उपलब्ध नहीं है। कहा जाता है कि तानसेन ने दो हजार से अधिक पदों की रचना की थी किंतु आज लगभग 400 पद ही प्राप्य है। 300 पदों की संगीतसार के अतिरिक्त तानसेन कृत कोई अन्य रचना उपलब्ध नही होती है। प्रसिद्ध भाषाविद् डा0 सुनीति कुमार चटर्जी ने तानसेन को हिन्दी कवि के रूप में स्वीकार किया है।[5] प्रसिद्ध इतिहासकार अबुलफजल लिखते है कि तानसेन का काव्य रचना गौण था किंतु भक्ति भाव का प्रदर्शन उनका प्रधान लक्ष्य था आज इन्ही कवियों की रचनाऍ हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। तानसेन की रचनाओं में संगीत और गायन के अतिरिक्त कष्ष्ण की बाललीला, मुरली लीला, राधा का रूप वर्णन, गोपी विरह आदि का प्रभावोत्पादक चित्रण हुआ है। तानसेन के पदों का भाव पक्ष अत्यंत व्यापक है। वास्तव में तानसेन एक उच्चकोटि के प्रतिभासम्पन्न कवि थे।

रहीम– अब्दुर्रहीम खनखाना हिन्दी के उन प्रतिष्ठित महान् कवियों में से एक है, जो दरबारी, योद्धा, राजपुरूष होकर भी एक सच्चे जन कवि है। भारत के धर्म–निरपेक्ष वातावरण को बल प्रदान करने में मध्ययुगीन साधु–संतो और मुस्लिम कवियों, सूफी संतो का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इन कवियों में रहीम का योगदान अमूल्य है। रहीम की गणना हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में होती है। रहीम की रचनाओं में कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति परिलक्षित होती है, जो उनके विराट व्यक्तित्व का परिचायक है। उनका नीति परक काव्य विश्व विख्यात है।

jghe dk tUe ykgkSj esa xq:okj 17 fnlacj 1556 bZ0 dks gqvk vkSj uke vCnqjZghe j[kk x;kA buds firk dk uke cSje [kk¡ vkSj ekrk dk uke lqYrkuk csxe FkkA cSje [kk [kku[kkuk lezkV vdcj ds vfHkHkkod FksA vdcj dks LFkkfir rFkk izfrf"Br djus esa cSje [kk¡ dk ;ksxnku vR;ar gh egRoiw.kZ jgk gSA cSje [kk¡ dh gR;k ds i"pkr~ vdcj us mudh iRuh vkSj vCnqjZghe dh f"k{kk&nh{kk] ikyu iks"k.k dh mRre O;oLFkk dhA Lo;a vdcj us i=or~) fo}ku bLyke gh egRoiw.kZ vehuk ds jghe dk f"k{kd fu;qDr fd;kA mUgksaus viuk xq: lqvjch] Qkjlh] rqdhZ vkfn Hkk"kk,¡ lh[khA jghe esa Hkkjrh; Hkk"kkvksa dks lh[kus dk vf/kd mRlkg FkkA osfgUnh vkSj laLd`r Hkk"kk ds iz.kk.M if.Mr FksA Lo;a jghe fo}kuksa vkSj dfo;ksa dk vknj rFkk lEeku djrs FksA muds ;gk¡ vusd dfo vkfJr FksA os viuh vk; dk cgqr cM+k Hkkx dfo;ksa ij [kpZ dj nsrs FksA mudh lsuk esa lSfud] dfo] fo}ku vkSj f"k{kd FksA tUe ls egkuh; gksus ds dkj.k jghe dks cgqr dqN lgus dh vknr iM+ xbZ FkhA jghe us vius thou esa vusd mrkj&p<+ko ns[ksA os ckcj ls ysdj tgk¡xhj rd dbZ ckn'kkgksa ds le; ds lk{kh jgsA os lSfud] dfo] fo}ku vkSj f"k{kd FksA tUe ls egku jghe Hkh osi wkZ%Hkkjrh; Fks blfy; s mudh rqyuk dfo;ksa ds dYir: l}s nkfu;ksa esa d.kZ ls xq.kokuksa esa Hkkst ls dh tkrh gSA mudk vifre O;fDrRo lHkh dks viuh vksj vkd"kZ dj ysrk FkkA muesa tkfrHksn] o.kZHksn dh y"kek= dh Hkkouk Hkh u FkhA jghe ,d dfo dh dksey rk vkSj lsukifr dh n`<+rk lekfgr FkhA

jghe us vius 72 o"kZ ds thou&dky esa vusd xzUFkksa dh jpuk dhA buds izeq[k jpuk,¡ gSa 1- jghe lrlbZ 2- cjoS uk;dk Hksn 3- jkl &iapk/;k;h 4- enuk"Vd 5- nhoku Qkjlh dforkoyh dk laxzg 6- okD;kr ckcjh dk Qkjlh vuqokn 7- J`axkj lksjBk 8- nksgkoyh 9- uxj "kksHkk 10- "kr jat&"krd 11- [ksV dkSrqd vkfn i) gSa bu xzUFkksa ds vyokok Hkh jghe us vkSj vf/kd xzUFkksa dh jpuk dh gksxh ysfdu os miyC/k ugh gSA buds J`axkj dkO; esa Hkkjrh; Hkkouk ,oa yksd laLd`fr dh Nki Li"V fn[kkbZ nsrh gSA jghe us viuh lrlbZ esa J`axkj o.kZ

किया। श्रृंगार परक काव्य में भी नीति तत्व का आरोपण करनें में रहीम को महारत हासिल थी। रहीम का श्रृंगार चित्रण अन्य कवि द्वारा वर्णित श्रृंगार काव्य से भिन्न और श्रेष्ठ है। रहीम का वियोग वर्णन यथार्थ परक अधिक है। रहीम के व्यक्तिगत जीवन में भी विरह एवं विशाद की अधिकता देखी जा सकती है। रहीम कृत विरह वर्णन में जनसाधारण की मनोदशा ही दिखाई देती है। वियोग अवस्था नर–नरेश सभी को व्याकुल कर देती है। रहीम के छः श्रृंगार सोरठों में गोपियों का विरह वर्णन मिलता है। रहीम का विरह वर्णन स्वाभाविक और भावपूर्ण है। दोहें और बरवै जैसे छोटे छंदो में भी विरह के उत्कृष्ट भावों की अभिव्यक्ति रहीम के काव्य कौशल की परिचायक है।

रहीम मूलतः इस्लाम धर्मालंबी होने से एक ईश्वर में विश्वास करते थे। रहीम का जन्म उस समय हुआ जबकि संपूर्ण भारत में भक्ति–भावना द्वारा दो धर्मो के बीच खाई को पाटने के प्रयास हो रहे थे। अकबर की धर्म नीति अनुकूल शिक्षा, संस्कृत भाषा ज्ञान, तुलसी के साथ मित्रता, गंग, तानसेन, बीरबल, नरहरि, सूरदास, मदनमोहन, टोडरमल, आदि भक्त कवियों की संगति के फलस्वरूप उदारमत्ता मुसलमान रहीम के मन में भी सगुण भक्ति के प्रति प्रेम जागृत हुआ। रहीम की रचनाओं से अनन्य भक्ति, धार्मिक उदारता और हिन्दू धर्म पद्धति के प्रति श्रद्धा का भाव प्रकट होता है। भारतीय आस्थाओं के प्रति उन्होने भक्ति भाव प्रदर्शित किया वह अनुपम है। कृष्ण, राम, शिव आदि के भक्ति सम्बंधी छंद रहीम रचनाओं में मिलते है। गोस्वामी तुलसीदास रहीम के मित्र थे। उन्होने अपने छन्दों में अनेक स्थानों पर राम का भी गुणगान किया है। रहीम के काव्य का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुचते है कि रहीम पर मध्यसुगीन संत साहित्य की समन्वयवादी दृष्टि तथा अकबर के संस्कारों की उदारवादी नीति की गहरी छाप दिखाई देती है। रहीम के काव्य में वर्णित विषयों को देखकर उन्हें भारत का महान् समकालीन कवि कहना ही उचित है।

गंग– गंग अकबर दरबार में स्थायी कवि के रूप में प्रतिष्ठित थे। कहा जाता है कि बीरबल और गंग कवि बालमित्र थे और बीरबल ने ही गंग को अकबर दरबार में राज्याश्रय दिलवाया था। डा0 शिवसिंह सेंगर ने गंग का नाम गंगा प्रसाद ब्राह्मण लिखा है।[5] गंग अकबर दरबार के प्रसिद्ध कवि थे। नागरी प्रचारिणी सभा त्रैवार्षिक खोज रिपोर्ट में गंग द्वारा रचित तीन ग्रंथो का उल्लेख मिलता है गंग पदावली, गंग पच्चीसी और गंग रत्नावली किंतु आज ये ग्रंथ अप्राप्य है। मूलतः गंग कृष्ण भक्त कवि थें इन पर वल्लभ संप्रदाय का प्रभाव था। इनकी रचनाओं में कृष्ण लीलाओं का चित्रण अधिक हुआ है। कृष्ण की बाललीला, राधा कृष्ण की प्रेमगाथा आदि का ह्रदयग्राही वर्णन इनकी रचनाओं में मिलता है। इनकी कविता में श्रृंगार और वीर रस के बेजोड़ छंद देखे जा सकते है। *पृथ्वीराज*– कविवर्य पृथ्वीराज अकबर के कृपापात्र होने के कारण प्रायः अकबर के दरबार में ही रहते थे। वे एक सच्चे देशभक्त कवि और हिंदी भाषा के विद्वान होने के साथ–साथ संस्कृत साहित्य, दर्शन ज्योतिष, पिंगल, सगीतशास्त्र में पारंगत थे। गंग लहरी, दशरथ रावऊल, वासुदेव रावउत, श्यामलता, बेलिकिशन आदि इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ है। हिन्दुस्तानी अकादमी से इनकी बलकिशन रूक्मिणीरी, श्री कृष्ण रूक्मिणी, चरित्रप्रेम दीपिका नामक तीन रचनाएँ प्रकाशित की है। पृथ्वीराज स्वतंत्र विचारधारा के निर्भीक कवि थे। मान्यता है कि वल्लभ सम्प्रदाय भक्ति में इनकी विशेष आस्था थी। इनके द्वारा डिंगल में लिखी हुई वीर रस की कविता का अपना विशिष्ट महत्व है। इस भाषा में लिखी हुई संगीत तथा श्रृंगार विषयक इनकी कविता प्रसिद्ध है। भक्ति और श्रृंगार विषयक एक उदाहरण प्रस्तुत है–

प्रेम इकंगी नेम प्रेम गोपिन को गयों,
बचपन विरह बिलाप सखी ताकि छपि छायो।
ज्ञान जोग बैराग मधुर उपदेसन भाख्यों,
भक्ति भाव अभिलाषा भुख बनितम मनु सख्यो।।

मनोहर कवि– मनोहर कवि अकबर के दरबार में मंत्री थे। अकबर ने इन्हें राय की उपाधि प्रदान की थी। "राय मनोहर" नाम से आप प्रसिद्ध थे। ये फारसी, संस्कृत और हिन्दी भाषा के विद्वान थे। मूलतः ये फारसी के कवि थें इनकी हिन्दी की रचनाओं पर भी फारसी का प्रभाव देखा जा सकता है। मिश्रबंधु के अनुसार ये फारसी और संस्कृत भाषा के महाकवि थे। शत प्रश्नोत्तरी नामक इनकी एक रचना का उल्लेख मिलता है। इनकी कविता के सम्बन्ध में मिश्रबंधु लिखते है[6] इनकी कविता बडी ही उदार, मधुर, सानुप्रास, भावपूर्ण और प्रशंसनीय है। इनका श्रृंगार विषयक उदाहरण प्रस्तुत है।

इंदू बदन नरगिस नयन संबुल वारे बार,
उर कुकुभ कोकिल बयन जोहि लरित लाजत मार।

सूरदास मदनमोहन– सूरदास मदनमोहन अकबर दरबार के प्रसिद्ध कवि रहे हे। वे उत्तर भारत के संडीले नामक स्थान के निवासी थे। ये अकबर दरबार की ओर से संडीले के अमीन पद पर नियुक्त थे और साधु सेवा और दानवीर प्रवृत्ति के व्यक्ति थें। इनकी कोई पूर्णाकार रचना उपलब्ध नही होती है। कुछ फुटकर पद वैष्णव कीर्तन तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास के ग्रंथों में प्राप्त होते है। इनकी रचनाओं में कृष्णभक्ति के पद, राधाकृष्ण का प्रेम वर्णन, कृष्ण का वात्सल्य भाव और संगीत विषयक कुछ पद यत्र–तत्र बिखरे हुये मिलते है। यह एक स्वतंत्र प्रवृत्ति के उच्च कोटि के कवि माने जाते है।

अकबर दरबार के अतिथि हिन्दी कवि

अकबर की उदार नीतियों के चलते अनेक कवि, कलाकारों का आवागमन राज्य तथा दरबार में होता रहा है। बहुत से कवियों का दरबार से सीधा सम्पर्क था तो कोई अकबर के सरदारों के सम्पर्क में थे। अकबर ने स्वयं सूरदास तथा कुंभनदास को अपने दरबार का निमंत्रण दिया किंतु स्वतंत्र प्रवृत्ति के इन कवियों ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाएं रखा और वे दरबारी कवि नही बन पाये किंतु इनका अकबर से संपर्क अवश्य रहा है। इन अतिथि हिंदी कवियों के सम्बन्ध में समग्र रूप से विस्तृत जानकारी उपलब्ध नही होती। ज्ञानस्रोतों से पता चलता है कि अकबर दरबार के अतिथि हिंदी कवियों का नाम सम्मान के साथ लिया जा सकता है। इन अतिथि कवियों में दुरसाजी, होलराय, ब्रह्मभट्ट, करनेश, महात्मा सूरदास, कुम्भनदास, व्यास आदि प्रमुख है।

1. दुरसाजी– दुरसाजी अपने दौर के प्रसिद्ध चारण कवि थे इनकी रचनाएँ डिंगल भाषा में प्राप्त होती है। इनके सन्दर्भ में अधिक जानकारी उपलब्ध नही होती। दुरसाजी अकबर के साथ–साथ अन्य राजाओं के भी संपर्क में रहे है। इनमें बीकानेर महाराज रायसिंह, जयपुर के महाराज मानसिंह, सिरोही के राजा राव सूरतान आदि उल्लेखनीय है। दुरसाजी स्वतंत्र प्रवृत्ति के कवि थे अतः वे दरबारी कवि नही बन पाये।
2. होलराय ब्रह्मभट्ट– अकबर दरबार से इनका प्रायः संपर्क रहा है। अकबर से इन्हें पुरस्कार स्वरूप कुछ जमीन प्राप्त हुई थी, जिस पर उन्होने होलपुर नामक गाँव बसाया था इनकी

कोई रचना उपलब्ध नही होती, यत्र–तत्र कुछ पद अवश्य मिलते है। होलराय अकबर दरबार के नवरत्नों के भी संपर्क में रहे है। इनमें खानखाना, टोडरमल, तानसेन, बीरबल तथा मानसिंह आदि कुछ प्रमुख है।

3. राजा आसकरण– राजा आसकरण अकबर दरबार के प्रतिष्ठित अतिथि हिंदी कवियों में से एक थें। अकबर दरबार के प्रभावशाली सामंतों तथा राजाओं में राजा आसकरण का नाम उल्लेखनीय है। अकबर ने इनकी सेवाओ से प्रभावित हो इन्हें राजा उपाधि दी थी। राजा आसकरण की कोई स्वतंत्र रचना उपलब्ध नहीं है। यहाँ–वहाँ इनके कुछ पद प्राप्त होते है। ये तानसेन, गोविन्द स्वामी, श्री गुसाई विट्ठलनाथ के प्रभावस्वरूप कृष्ण भक्ति की ओर अग्रसर हुयें। इनके पदों में कृष्ण के वात्सल्य भाव की अधिकता है। आसकरण की रचनाएं दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, कीर्तन संग्रह, वार्ता साहित्य आदि में दिखाई देती है।
4. चतुर्भुजदास– चतुर्भुजदास अकबरी दरबार में एक हजार मासिक वेतन पाने वाले विद्यानुरागी विद्वान थे। अपनी विद्वता के कारण ही वे अकबर के दरबार में अपनी जगह बनाने में सक्षम हुये। इनका "द्वादशयश" नामक ग्रंथ प्राप्त होता है। चतुर्भुजदास ने कृष्ण भक्ति विषय पद लिखे। अकबर के दरबार में रहते हुये वह बाद में वल्लभ संप्रदाय में दीक्षा लेकर श्री गुसाई विट्ठलनाथ के साथ गोर्वधन की सेवा में समर्पित हो गये।
5. करनेश– कविवर्य करनेश बंदीजन का अकबरी दरबार से सम्पर्क रहा है। इनकी तीन रचनाओं का नामोल्लेख मिलता है– 1. करणाभरण 2. श्रुतिभूषण 3. भूप भूषण। अकबर दरबार के वरिष्ठ कवि नरहरि से इनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे।
6. महात्मा सूरदास– महाकवि सूरदास अकबर के समकालीन स्वतंत्र चेतना से युक्त प्रसिद्ध भक्त कवि थे। कहा जाता है कि अकबर से इनका संपर्क अवश्य रहा किंतु इन्होने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखा और सूरदास महाकवि के रूप में प्रसिद्ध हुये। दरबार की सेवा का प्रस्ताव इन्होने विनम्रता के साथ अस्वीकार कर दिया। कृष्ण–भक्त कवियों में सूरदास का नाम विख्यात और सर्वोपरी है। इनकी प्रमुख रचनाओं में सूर सागर, सूर सारावली, साहित्य लहरी, नल दमयन्ती, ब्याहलो प्रमुख है।
7. कुंभनदास– कुंभनदास का भी अकबर से सम्पर्क अवश्य रहा है किंतु वे भी स्वतंत्र रूप से भक्त कवि थे। कवि कुंभनदास के सामने अकबर ने अपने दरबार की शोभा बढ़ाने का प्रस्ताव रखा था किंतु उन्होने यह कहकर कि "संतन कहा सीकरी सो काम" कहकर दरबार से दूर ही रहे। उनके लिये तो अपने गिरिधर ही सब कुछ थे और वे आजीवन उनकी भक्ति में लीन रहे।
8. व्यास– अकबर दरबार के अतिथि कवि के रूप में कविवर्य व्यास जी का आना–जाना लगा रहता था। इनके सम्बन्ध में भी अधिक जानकारी उपलब्ध नही है। इसी प्रकार से तुलसीदास भी अकबर के समकालीन कवि रहे है। इन कवियों के अतिरिक्त चंद्रभान, अमृत, जैत, जगदीश, जोध, जगमग, आदि हिंदी कवियों का भी अकबर से सम्पर्क रहा है। किंतु इनके विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नही होती।

सरांश रूप में कहा जा सकता है कि अकबर की उदार नीतियों के कारण अकबर का दरबार कलाकारों, कवियों तथा साहित्यकारों से भरा हुआ दिखाई देता हैं। हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि

में इनका योगदान अविस्मरणीय हैं। ये कवि दरबार के आश्रित होकर भी साहित्य सृजन के लिये बंधन से मुक्त दिखायी देते है। मध्ययुगीन दरबारी चाटुकारिता इन कवियों में नही दिखायी देती है। भावाभिव्यक्ति इन कवियों का मुख्य लक्ष्य रहा है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, डा० सरयू प्रसाद. (1950). अकबरी दरबार के हिन्दी कवि. लखनऊ विश्वविद्यालयः लखनऊ।
2. चटर्जी, डा० सुनीति कुमार. नेशनल प्लैग एण्ड अदर एसेज।
3. प्रसाद, मुंशी देवी. राजा बीरबल।
4. सिंह, डा० बी0 कैलाश. अकबरी दरबार के हिन्दी कवि और रहीम अन्नपूर्णा प्रकाशनः कानपुर. प्रथम संस्करण।
5. मिश्रबंधु. (1957). मिश्रबन्धु विनोद. भाग 1. गंगा ग्रन्थागारः इलाहाबाद।
6. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास।
7. गोकुलनाथ, स्वामी. दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता।